Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
www.researchguru.net
Volume-18, Issue-3, December-2024

सतीश गुजराल की कला में अभिव्यक्त संवेदना

डॉ. रीतिका गर्ग
सहायक आचार्य
चित्रकला विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारिका शर्मा
शोधार्थी
चित्रकला विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश – *संवेदना शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द संवेद से हुई है, जिसका अर्थ है सुख–दुःख का अनुभव, ज्ञानबोध की प्रतीति होना। इसके अलावा संवेदना का अर्थ ज्ञानेंद्रियों के अनुभव से हैं। आँख, नाक, कान, जिव्हा तथा त्वचा हमारी प्रमुख ज्ञानेंद्रियाँ है। इनमें वातावरण के परिवर्तनों को ग्रहण करने की क्षमता होती है तथा इन संवेदों से हमें अपने आसपास के वातावरण का बोध होता है। एक संवेदनशील व्यक्ति दूसरों के दुःख–दर्द को अच्छे से समझ लेता है। जब हम किसी अन्य का दुःख अपनी आत्मा पर लाते हैं, तब कहीं जाकर संवेदना का जन्म होता है। कहा जाता है कलाकार की कला समाज का दर्पण होती है। कलाकार जो कि भावुक प्रवृत्ति का व संवेदनशील होता है, अपने आसपास घटित घटनाओं से तथा स्वयं के जीवन–संघर्षों से प्रेरित होकर अपने भावों की अभिव्यक्ति कलाकृतियों के माध्यम से बहुत ही सरलता पूर्वक करने का प्रयास करता है।*

आधुनिक भारतीय कलाकारों की अगर बात की जाए तो उनमे 'सतीश गुजराल' जिन्होंने बचपन से ही संघर्षों को सामना किया तथा जीवन में आने वाली चुनौतियों का ड़टकर मुकाबला किया। शारीरिक कमजोरी को बाधा न मानते हुए उन्होंने कला के माध्यम से ऊंचा मुकाम हासिल किया।

मुख्य शब्दः– *संवेदना, ज्ञानबोध, ज्ञानेंद्रियाँ, दर्पण, संघर्ष, चुनौती, कलाकृतियाँ।*

बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार ''सतीश गुजराल का जन्म पंजाब में झेलम (वर्तमान में यह स्थान पाकिस्तान में है।) नामक स्थान पर 1925 ई. में हुआ।"[1] उनके परिवार के सभी सदस्य राजनीति से जुड़े हुए थे, जिसके प्रभावस्वरूप गुजराल भी बचपन से राष्ट्रवाद की बातें सुनने–समझने लगे। उनके बड़े भाई इंद्रकुमार गुजराल (भारत के 12वें प्रधानमंत्री) ने गुजराल की साहित्य व राजनीतिक समझ को विकसित किया व सक्रिय रूप से राजनीति में भागीदारी निभाते रहे।

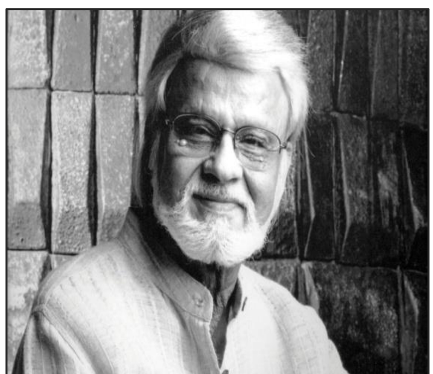
चित्र सं.–1 छायाचित्र सतीश

कहते है– समय का चक्र कब फेर–बदल कर ले, कुछ कहा नहीं जा सकता। ऐसा ही एक फेर–बदल गुजराल की जिन्दगी में हुआ। आठ साल की उम्र में गुजराल एक दुर्घटना का शिकार हुए। कश्मीर में रिक्की पुल को पार करते समय अचानक गुजराल गिर गए। प्रकृति ने उनके जीवन के साथ ऐसा क्रूर मजाक किया कि तेरह वर्ष की उम्र में ही उनकी श्रवण शक्ति छीन ली।[2] वें बहरे हो गए, इस बात का वर्णन गुजराल ने अपनी आत्मकथा "अ ब्रश विद लाइफ" में किया है। जिसमें उन्होंने लिखा है कि उस दिन अगर मेरी माँ ने मुझे झिंझोड कर जगाया नहीं होता तो मुझे पता ही नहीं चलता कि सुबह हो गई है और सूरज की रोशनी से मेरा घर नहा उठा है। उस वक्त मैंने कुछ

कहने की कोशिश की, पर अपनी ही आवाज सुन नहीं पाया। मेरी माँ ने मुझे हिलाया और पूरी ताकत से मेरे कानों में चिल्लाई, मैं सिर्फ उनके मुँह को बोलते हुए देखता रहा, मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

इस कारण गुजराल को बचपन से ही कई अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसका असर उनकी पढ़ाई पर आया। उनके पिता नहीं चाहते थे कि शारीरिक अक्षमता गुजराल की पढ़ाई में बाधा बने, परन्तु ऐसे बच्चें को स्कूल में भर्ती करने के लिए

कोई तैयार नहीं हुआ। शारीरिक अक्षमता होने के बावजूद स्वयं गुजराल ने हार नहीं मानी। उन्होंने भावों व विचारों की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम की तलाश की। वह माध्यम था– कला, जिसनें उनकी जिन्दगी को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

13 वर्ष की उम्र में उन्होंने लाहौर के मेयो स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला लिया। उस वक्त कला की शिक्षा भी गुजराल के लिए अंसभव या मुश्किलों भरी प्रतीत हो रही थी। किशोरावस्था से ही बालक गुजराल का संघर्ष जारी रहा, पर परिवार के सहयोग से इस कठिन दौर से निकलने की उन्हें हिम्मत मिली। इस दौरान उर्दू उपन्यास, जीवनियाँ व रचनाएँ पढ़कर वह अपने ज्ञान को बढ़ाने लगे। मेयो स्कूल में दाखिला तो मिल गया परंतु सुन पाने की क्षमता न होने के कारण उन्होंने अपनी मेहनत से अपने आप थोड़ी बहुत अंग्रेजी सीखी।

मेयो स्कूल लाहौर से गुजराल ने 1939–44 तक ग्राफिक कला का अध्ययन किया। उसके पश्चात् तीन वर्ष सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट बम्बई में अध्ययन किया।[3] वहाँ पर उन्होंने पेन्टिंग विधा को सीखा, परन्तु विभाजन की त्रासदी और आर्थिक संकटो के करण गुजराल आखिरी साल की पढ़ाई पूरी नही कर सके। इसके बाद गुजराल शिमला गये, वहाँ पंजाब पब्लीसिटी डिपार्टमेंट में तीन साल तक काम किया, परन्तु उन्हें वहाँ कला का कोई माहौल नहीं मिला। एक ओर नौकरी मिली वहीं दूसरी ओर नौकरी में इतनी व्यस्तता थी कि कला साधना के लिए उन्हें समय ही नहीं मिल पाता था, जिस कारण वें असमंजस में रहने लगे और नौकरी छोडने का निश्चय किया। एक दिन अचानक उनकी मुलाकात डॉ. चार्ल्स फाबरी से हुई। वे उनकी बनायी कलाकृतियों को देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने युवा कलाकार को दिल्ली जाने की सलाह दी।[4] इसके बाद वे नौकरी छोड़ कर दिल्ली आ गए।

लियोनार्डो दा विंची, माइकल एंजिलो, पिकासो जैसे कलाकार गुजराल के प्रेरणास्रोत थे। निराशा, दर्द का मसीहा, आत्महत्या से पूर्व, तिरस्कार, तूफान के दिन, स्मृतियों का जाल, अतीत की यादें, भाग्य, अंत का आरंभ, दोपहरी का अंधियारा, जश्न, आजादी, कहाँ है प्रकाश, आदमी, मशीन, उम्मीदें, मॉर्निंग, आत्मचरित्र, मोहनजोदड़ो संस्कृति इत्यादि गुजराल के चित्रों के शीर्षक रहे।

कहा जाता है कि गुजराल के जीवन में एक ऐसा दौर भी आया जब उन्होंने 10 वर्ष तक पेंटिंग नहीं की तथा अन्य विधाओं में अपने भावों को अभिव्यक्त करते रहे लेकिन अचानक उनके मन में पेंटिंग करने की तीव्र इच्छा जागृत हुई। वह लगातार 13–14 घंटे पेंटिंग करने लगे। इस दौरान उन्होंने रोजमर्रा की घटनाओं व सामान्य–जनजीवन को चित्रित किया। उनकी बनाई पेंटिंग्स में बड़ी–बड़ी इमारतें, भवन, व्यथाकुल आकृतियाँ जीवन के संघर्ष को दर्शाती प्रतीत होती है। दरअसल संघर्ष मानव जीवन है, जिस प्रकार एडवेंचर में मनुष्य अपने शौक पूरा करने के लिए भाग लेता है, उसी प्रकार वास्तविक जीवन में इन संघर्षों का सामना होता है, तो वह भयभीत हो जाता है। इस भय को दूर करने के लिए वह कलाओं का सहारा लेता है। गुजराल ने सामाजिक, राजनीतिक विषयों को अमूर्त माध्यम में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया।

उस समय देश में बटँवारे की स्थिति बनी हुई थी। विभाजन की वजह से अनेक लोग अपने परिवार से अलग हो गए। विभाजन की पीड़ा लोगो की आँखो में साफ नजर आती थी। उनके द्वारा मार्मिक स्ट्रोक के साथ चित्रित किए गए विभाजन के दर्दनाक यादों से कोई भी अभिभूत हो जाता है। कैनवास पर तैलीय माध्यम से अतिरंजित मानवाकृतियाँ सन् 1947 के अशांत वातावरण के दौरान घटी घटनाओं को अर्थात दर्द, पीड़ा व दुःख को अभिव्यक्त करती हैं। इसके गवाह स्वयं गुजराल रहे थे। विभाजन से संबधित पेंटिंग्स उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है, जिसमें उस समय के दर्दनाक आघात को दर्शाया गया है। उनका पूरा परिवार माता–पिता, भाई व स्वयं गुजराल विभाजन के दौरान बहुत से लोगों की मदद करने में व्यक्तिगत रूप से शामिल थे। उनके शुरुआती काम उस गहरे अनुभव की ही देन है। गुजराल विभाजन की घटना से बहुत दुःखी थे, जिसके कारण उनकी कला में असह्य पीड़ा, विकृति के रूप में प्रकट होने लगी तथा बिना नौकरी के उन्हें आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। अचानक उनकी किस्मत का तारा बुलन्द हुआ। उन्हीं दिनों सन् 1950 में दिल्ली में मैक्सिकन दूतावास खुला।[5] उनमें प्रसिद्ध मैक्सिकन कवि आक्टेवियो पाज सांस्कृतिक परामर्शदाता थे। वे किसी उपयुक्त भारतीय युवा चित्रकार की तलाश में थे। पाज को सतीश में मैक्सिकन कला की भावना के अनुरूप प्रवृति का आभास हुआ। अतः 1952 में गुजरात स्कॅालरशिप पर दो वर्ष के लिए मैक्सिको चले गए। वहाँ उन्हें सार्वजनिक कला की श्रेष्ठता व सक्रियता का ऐतिहासिक माहोल मिला।

मैक्सिको में पेन्टिंग का मतलब था– म्यूरल। गुजराल के लिए यह अनुभव बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ। वहाँ उनकी कला शैली मैक्सिकन चित्रकारों डेविड सेक्वीरोस(David sequieros), डिएगो रिवेरा(Diego rivera) तथा ओरोज्को(orozco) से प्रभावित हुई।[6] वहाँ उन्होंने भित्तिचित्रण व भित्तिसज्जा(म्यूरल) के बारे में जानकारी प्राप्त की। लौटते समय वें न्यूयार्क, लन्दन, पेरिस आदि में

रूकें और अपने चित्रों की प्रदर्शनियाँ करते हुए भारत लौटे। विदेश से आने के बाद गुजराल ने दिल्ली को ही अपना निवास स्थान बना लिया। वहाँ रहकर उन्होंने पेन्टिग, मूर्तिशिल्प, म्यूरल, कोलाज व स्थापत्य जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए तथा भित्तिचित्रण व भित्तिसज्जा के लिए नए आयामों व माध्यमों की तलाश की। वहाँ आकर उन्होंने अपनी पहली एक प्रदर्शनी आयोजित की। उन दिनों स्टेट्समैन अखबार में चार्ल्स फाबरी का कला स्तम्भ बहुत मशहूर था। अगर वह किसी कलाकार का नाम भी गिना देते थे, तो उस कलाकार की प्रतिष्ठा में चार चाँद लग जाते थे। वैसे "डॉ. फाबरी आसानी से अपने कॉलम में किसी कलाकार को जीनियस नहीं घोषित करते थे, पर सतीश गुजराल को उन्होंने जीनियस कहा।"[7]

सन् 1960 से 1970 के दौरान गुजराल ने चित्र व म्यूरल विधा में काम किया परंतु उन्होंने पेंटिंग व मूर्तिशिल्प विधा को नहीं छोड़ा। उन्होंने लोहड़ी के त्यौहार में जलने वाली लकड़ी के विविध स्वरूपों से प्रभावित होकर मूर्तिशिल्पों की रचना की। इसके अलावा भैंसों के गले में लटकती हुई घंटियों से विभिन्न धातु कलाकृतियों का निर्माण किया। ग्रेनाइट के विभिन्न रंगों व पोतो से प्रभावित होकर मानव व जानवरों के विभिन्न मूर्तिशिल्पों की रचना की मूर्तिशिल्प में स्ट्रीट सिंगिंग कपल मानव और मशीन श्रृंखला अन्य शीर्षकहीन आकृतियाँ प्रमुख है।

म्यूरल के क्षेत्र में गुजराल ने कॉफी कार्य किया। विशेषतः जली हुई लकड़ी पर काम करने वाले भारत के पहले कलाकार थे। पेन्टिंग से लेकर स्थापत्य कला की लगभग सभी विधाओं में उन्होंने कार्य किया। स्थापत्य की उनके पास कोई डिग्री नहीं थी, परन्तु उनके अंदर एक जज्बा था, जिसने उन सभी चुनौतियों का सामना किया और देश–विदेशों में अपनी पहचान कायम की। स्थापत्यकला के अंतर्गत बेल्जियम के दूतावास का डिजायन भी गुजराल ने ही तैयार किया, जिसे 20वीं सदी के श्रेष्ठतम भवनों की सूची में स्थान प्राप्त था। गुजराल ने देश–विदेश में अनेक प्रदर्शनियाँ आयोजित की। सन् 1952 में गुजराल ने अपनी प्रथम एकल प्रर्दशनी आयोजित की। तब प्रदर्शनी को देखने के लिए उनके बड़े भाई इन्द्रकुमार गुजराल के साथ देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू भी आये थे। उस प्रदर्शनी में से दो चित्र सर्वप्रथम श्री जवाहर लाल नेहरू ने खरीदे थे। असम, चंडीगढ़, नई दिल्ली में सात बार, मुम्बई में चार बार, विदेशों में एम्स्टर्डम, बर्लिन, काहिरा, मैक्सिको, रोम आदि में एक बार, लंदन में दो बार, न्यूयार्क में पाँच बार आपके एकल चित्रों का प्रदर्शन हो चुका है।[8] उनके बनाये चित्र संग्रहालयों, व्यक्तिगत संग्रहों व कला संस्थाओं में सुरक्षित है। उनके बनाये म्यूरल ने विशिष्ट ख्याति प्राप्त की।

अन्य कलाकारों के विपरीत सतीश गुजराल को किसी विशेष शैली तक सीमित रखना आसान नहीं क्योंकि उनका काम, माध्यम, सामग्री व शैलियों की सीमाओं को पार करता हैं। 6 दशकों तक

लगातार उन्होंने विविध कलात्मक कार्य किये। एक चित्रकार, मूर्तिकार, भित्तिचित्रकार, वास्तुकार यहाँ तक कि इंटीरियर डिजाइनर के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनाई।

उनके चित्र नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट नई दिल्ली, पंजाब संग्रहालय, चंडीगढ, डेविस, कोपेनहावेन, लॉस ऐजेलिस, मैक्सिकों ,न्यूयार्क, पिट्सवर्ग, स्टॉकहोम, वाशिगंटन, लंदन आसाम, वी. के. नेहरू, नई दिल्ली एवं अन्य प्रमुख व्यक्तियों के संग्रहों में संग्रहित है।[9] भारत के प्रथम कोलाज कलाकार के रूप में प्रसिद्व गुजराल के जीवन वृत्तांत पर कई वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंट्री) बनी, जिसमें एक वृत्तचित्र "ए ब्रश विथ लाईफ" 15 फरवरी 2012 में जारी हुई, इसकी समयावधि 24 मिनिट है। यह आत्मकथा सन् 1998 में प्रकाशित हुई जो इसी नाम से उनकी अपनी किताब पर आधारित थी।

प्रतिभा संपन्न गुजराल को देश–विदेश में कई राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया। सन् 1999 में गुजराल को भारत सरकार का दूसरा सर्वोच्च पुरस्कार पद्मविभूषण प्रदान किया गया। इसके अलावा गुजराल को कई पुरस्कार मिले। दो बार चित्रकला के लिए व एक बार मूर्तिकला के लिए कला का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। मैक्सिको का "लियोनार्डो द विंसी पुरस्कार" बेल्जियम के राजा का "आर्डर ऑफ द क्राउन" सम्मान प्राप्त करने वाले देश के प्रथम व्यक्ति बने। राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली ने उनकी कलात्मक उपलब्धियों पर एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया, जिसमें उनके अनेक चित्रों की प्रतिकृतियाँ भी प्रकाशित है। 26 मार्च, 2020 को कला की इस महान विभूति का निधन हो गया।[10]

<u>उपसंहार</u> – सतीश गुजराल के जीवन में बचपन से ही अनगिनत समस्याओं का पहरा रहा परंतु उन्होंने उन समस्याओं को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उनकी दृढ़निष्ठा व संघर्ष ने उन्हें भारत के प्रमुख कलाकारों में शामिल कर दिया। वे एक संवेदनशील व भावुक प्रवृत्ति के कलाकार थे। उनका मानना था कि जब तक कोई व्यक्ति स्वयं पीड़ा और दुःख–दर्द का अनुभव नहीं करता, तब तक दूसरों की पीड़ा को समझना मुश्किल प्रतीत होता है। गुजराल तो स्वयं इस पीड़ा से गुजरे थे। गुजराल ने अपनी स्वयं की पीड़ा व इसके अलावा जिन घटनाओं को उन्होंने देखा, उन्हें कला के जरिए अभिव्यक्त किया। जिससे उनकी कला को गहरी संवेदनशीलता और भावनात्मक आयाम मिला। इस महान कलाकार की कलाकृतियों के जरिए दर्शक भी उनके जीवन संघर्ष को देखता है व महसूस करने का प्रयास करता है। उनकी बनाई कलाकृतियाँ कला व कलाकार की दुनिया को तथा उस समय के वातावरण को समझने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान करती है।

सतीश गुजराल की प्रमुख कलाकृतियाँ

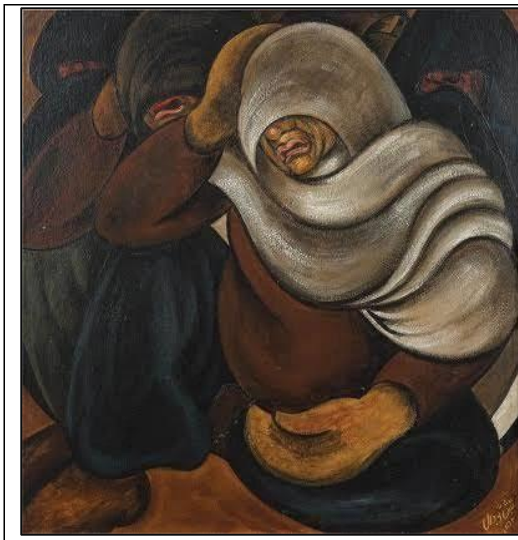

चित्र सं.–2

चित्र सं.–3

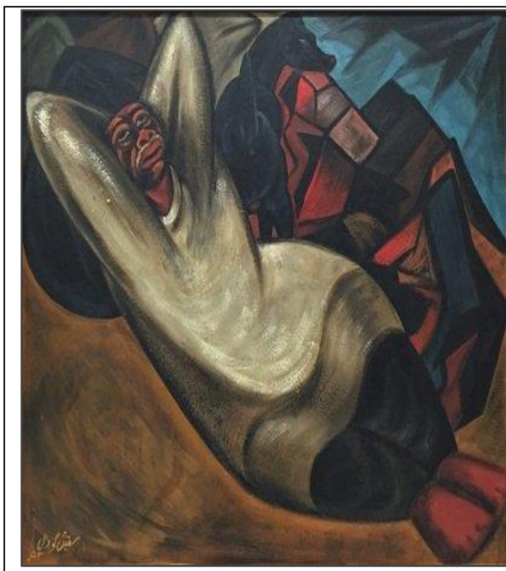

चित्र सं.–4

चित्र सं.–5

चित्र सं.–6 चित्र सं.–7 चित्र सं.–8

संदर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल, डॉ. गिरिराज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, दसम् संस्करण, 2014, पृष्ठ सं. 186
2. गोस्वामी, डॉ. प्रेमचंद, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, सातवाँ संस्करण, 2019, पृष्ठ सं. 95
3. अग्रवाल, डॉ. गिरिराज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, दसम् संस्करण, 2014, पृष्ठ सं. 186
4. भारद्वाज, डॉ. विनोद, वृहद आधुनिक कलाकोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006, पृष्ठ सं. 120
5. अग्रवाल, डॉ. गिरिराज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, दसम् संस्करण, 2014, पृष्ठ सं. 186
6. वही, अग्रवाल, डॉ. गिरिराज किशोर, पृष्ठ सं. 186
7. भारद्वाज, डॉ. विनोद, वृहद आधुनिक कलाकोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006, पृष्ठ सं. 121
8. प्रताप, डॉ. रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 17वाँ संस्करण, 2014, पृष्ठ सं. 371
9. वही, प्रताप, डॉ. रीता, पृष्ठ सं. 371
10. https://en.m.wikipedia.org/wiki/satishgujaral,sunday,08oct.2023,time 03:18pm

चित्र संग्रह

1. SATISH GUJARAL, https://images.app.goo.gl/dkPy1hxoNpfBsVT79
2. https://images.app.goo.gl/qaEvGnRm9HyAoNHBA, 19/11/2024
3. https://images.app.goo.gl/BYWxKv2oJQ4A6Uy37, 19/11/2024
4. https://images.app.goo.gl/V4FA43p85yPZkM1n9, 19/11/2024
5. https://images.app.goo.gl/ifev8FpPMsDe2XEc6, 19/11/2024
6. https://images.app.goo.gl/Hhc2Fp8EWNPsxPL99, 19/11/2024
7. https://images.app.goo.gl/T3WgU1PGzx6p4x5F7, 19/11/2024
8. https://images.app.goo.gl/ycPP1v7P3ukBC2Kj9, 19/11/2024